कृषक विमर्शः प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासों के विशेष संदर्भ में

-दिलीप सिंह राजपूत

शोधार्थी पी–एच.डी. हिन्दी विभाग, कला एवं मानविकी अध्ययनशाला, मैट्स वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

मानव जीवन के विकास की शुरुआत सर्वप्रथम कृषि कार्य तथा पशुपालन से हुआ। भारत प्रमुखतः गाँवों का देश है। हमारा देश प्राचीन काल से ही कृषि आधारित रहा है, इसके उदाहरण हमें रामायण काल से दिखाई देते है। लेकिन उस समय "सबे भूमि गोपाल की" इस उक्ति के द्वारा यह दर्शाया गया है, कि जहाँ पर व्यक्ति हल चलाकर अनाज पैदा कर लेता था, वही जमीन उसकी होती थी। जमीन खरीदने–बेचने का कार्य नहीं होता था। किसान बहुत आनंदमय तथा खुशहाल जीवन व्यतीत करता था, लेकिन जैसे–जैसे मानव विकास के पथ पर अग्रसर होता गया, वैसे–वैसे नये–नये बदलाव आते गए। भूमि का अधिग्रहण होने लगा और जमीन जमीदारों के आधिपत्य हो गयी । किसान अन्नदाता हैं, कठिन परिश्रम करके खेतों में कृषि कार्य करते हैं। समस्त मानव जाति को भोजन उपलब्ध करवाता है। साहित्य में कृषक विमर्श से हम किसानों की पीड़ा और उनकी समस्याओं को सहीं ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं। किसानों का जीवन समस्याओं का पुलिंदा है। स्वत्रतंता पूर्व से ही किसान कर्ज की समस्या से जूझ रहा है, स्वरूप में परिवर्तन है, परन्तु आज भी कर्ज के बोझ तले दबा हुआ है। पूर्व में सेठ, साहूकार, जमींदार से किसानों को कर्ज लेना पड़ता था। वर्तमान में बैंक या बिचौलियों द्वारा कर्ज लेने में मजबूर ग्रामीण किसानों को ठगा जा रहा है।

भूमिहीन किसानों की अपनी अलग समस्याएँ हैं, कृषि आज भी देश के प्रत्येक मानव के जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन है। परन्तु भूख, साधनहीनता, अभाव इत्यादि के कारण साधारण किसान सदियों से पिसता आ रहा है। कृषक के मानस पटल पर अनेक वर्षों की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ घर करती जा रही है। किसान स्वयं के दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि कृषि कार्य करना अभिशापित जीवन जीने के समान है। किसानों की एक महत्वपूर्ण समस्या यह भी है, कि उन्हें अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता। साथ ही उन्हें अपनी फसल को बेचने के लिए तमाम कागजी कार्यवाही करनी पड़ती है। मानसून भी किसानों के जीवन को प्रभावित करता है, अच्छी मानसून न होने पर किसान अपनी फसल औने–पौने दाम पर ही बेच देता है। जिससे उन्हें आर्थिक रूप से हानि होती है, आज भी किसान यदि मंडी में फसल बेंचने के लिए जाता है। तो उसको दिनों तक इंतजार करना पड़ता है| परिणामस्वरूप उसकी फसल मंडी में रखे–रखे ही वर्षा के कारण

खराब हो जाती है। कभी–कभी किसान अधिक हानि होने के चलते आत्महत्या भी कर लेते हैं और उनकी आत्महत्या पर भी मुआवजा मिलना दूभर हो जाता है। परिस्थितिवश किसान कभी नहीं चाहता कि उसकी आने वाली पीढ़ी कृषि कार्य करे। यह हमारा दुर्भाग्य है कि अन्नदाता ही कृषि से पलायन करने पर विवश हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से ही साहित्य के विविध क्षेत्रों में कुछ लेखकों का पदार्पण हो चुका था, जिन्होंने किसानों को अपने साहित्य में स्थान दिया। कृषक समस्या का सहज और सजीव वर्णन सर्वप्रथम प्रेमचंद युग में ही परिलक्षित होता है। प्रेमचंद जी ने किसान जीवन की समस्याओं को सूक्ष्म अंकन किया है। किसानों को उन्होंने जातियों अथवा धर्म में न बांट कर एक वर्ग के रूप में परिभाषित किया है और किसान वर्ग के रूप में देखने पर ही किसानों का हित हो सकता था।

साहित्य जगत में अनेक उपन्यासकारों ने कृषक जीवन को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है परन्तु प्रेमचंद जी ऐसे प्रथम लेखक हैं, जिन्होंने कृषक जीवन का समग्रता से उल्लेख किया है। "हिन्दी में सर्वप्रथम प्रेमचंद ने उपन्यास को एक सुनिश्चित कला रूप दिया। उनकी प्राणदायिनी संवेदनानुभूति ने पूर्ववर्ती उपन्यास के शिथिल तथा विश्रृंखलित रूप को सजीव कला माध्यम के रूप में विकसित किया।"[1] प्रेमचंद ने कृषक जीवन के सम्पूर्ण पहलुओं का मार्मिक चित्रण किया है। "किसानों के जीवन से संबंधित उनके निम्नलिखित उपन्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है– वरदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि और गोदान।"[2] प्रेमचन्द जी का सर्वप्रथम उर्दू से अनूदित हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' 1915ई. में प्रकाशित हुआ। "जमीदार महंत रामदास यज्ञ और तीर्थ यात्रा के लिए अपनी असामियों पर हल पीछे पाँच रूपया चंदा लगा देते हैं। एक वृद्ध अहीर चेतू इसका विरोध करता है तो उसकी हत्या करवा देते हैं।"[3] कथित उपन्यास में चेतू नामक पात्र के माध्यम से किसानों की दुर्दशा को अभिव्यक्त किया गया है।

सन 1922ई. में 'प्रेमाश्रम' के माध्यम से प्रेमचंद जी ने जमीदारों और किसानों के आपसी संबंधों के बीच किसानों के जीवन में शोषण के भयंकर रूप दर्शाया है। यह उपन्यास हिन्दी का प्रथम उपन्यास है, जिसमें कृषक वर्ग के यथार्थ जीवन और उसकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। प्रेमचंद जी की रचना का केन्द्र बिंदु किसान रहा है। प्रेमचंद जी ने एक साधारण किसान के कष्ट भरे जीवन को समझते हुए उपन्यासों की रचना की है। लेखक की पैनी दृष्टि उपन्यास में एक घोषणा करती है– "भूमि या तो ईश्वर की है, जिसने इस कृषि को आरंभ किया है या किसान की, जो ईश्वरीय इच्छा के अनुसार इसका उपयोग करता है।"[4] उपर्युक्त कथन किसान से लगाव को सरल शब्दों में व्यक्त करते हैं। प्रेमचंद जी के

कथा साहित्य के किसान समय–समय पर अपने अधिकारों और स्वाभिमान के लिये संघर्ष करते दिखाई पड़ते हैं। मनोहर के अनुसार– "जमीन कोई खेरात जोतते हैं। उसका लगान देते हैं। एक किश्त भी बाकी पड़ जाए तो नालिश होती है। कारिन्दा कोई काट है, न जमींदार कोई होंवा है। यहां कोई दबेल नहीं है। जब कौड़ी–कौड़ी लगान चुकाते हैं तो धोंस क्यों सहें?"[5] किसान चेतना के विभिन्न स्तरों को इसमें अंकित किया गया है।

प्रेमाश्रम में सामंती व्यवस्था को दर्शाने के साथ–साथ उसमें परिवर्तन को भी प्रस्तुत किया है, जिसे उन्होंने प्रभाशंकर के माध्यम से दिखाया है– "प्रभाशंकर पुराने किस्म के जमींदार थे, जो रैयत से सबकुछ लेते थे, लेकिन उनके व्यवहार में फिर भी एक प्रकार की पारिवारिकता बनी हुई थी। फसल खराब हो जाने पर वे लगान में छोटी–बड़ी छूट भी दे देते थे। गाँव में लड़कियों के विवाह में उनकी ओर से सहायता भी की जाती थी। इसलिए किसानों को उनके अत्याचार भी अत्याचार नहीं लगते थे।"[6]

उपन्यासकार उस पीढ़ी से जुड़ा था, जो कोटि–कोटि किसानों पर हो रहे अत्याचार को समीपता से देखा और सुना था। सदियों से पीड़ित हो रहे किसानों की आवाज को बुलंदी प्रदान करने के लिए किसान–जीवन पर आधारित उपन्यास प्रेमाश्रम का अंकन हुआ। प्रेमशंकर के माध्यम से आधुनिक चेतना को दर्शाया है जो किसानो के हित के लिए अपने अधिकारों को भी त्याग देते है। किसान उद्धार में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते है। प्रेमाश्रम में जमींदारों द्वारा किए गए अत्याचार, साथ ही पुलिस प्रशासन के जुल्म, वकीलों की जालसाजी, न्यायाधीशों का अंधापन, पशुओं का चरागाहों में न चरने देना, किसानों के ऊपर बेदखली, बेगार से निराश किसान के द्वारा हत्या और आत्महत्या आदि का सजीव वर्णन किया है।

डॉ.रामविलास शर्मा कहते हैं– "हिन्दी में इस तरह का उपन्यास किसी ने पहले न लिखा था। एक तो किसानों पर लिखना ही रसराज का अपमान था। उस पर किसी खास आदमी का नायक न बनाना और भी अनोखा प्रयोग था। प्रेमचंद ने पाप और पुण्य के राक्षस और देवता नहीं रचे। उन्होंने उस धड़कन को सुना, जो करोड़ों किसानों के दिल में धड़क रही थी। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा विषय बनाया जिसे भरपूर निगाह देखने का हिसाब ही बड़ों–बड़ों को न हुआ था। उन्होंने दिखलाया कि हिन्दुस्तान की साधारण जनता में साहस, धीरता और मनोबल के कौन से स्त्रोत छिपे पड़े हैं। प्रेमचंद ने सदियों से पिसते हुए दासों की चेतना को, जो अब जाग रही थी और उनके हृदय में इंसान की तरह जीने की

तीव्र लालसा पैदा कर रही थी, को अपना कथा विषय चुना। प्रेमाश्रम लिखना एक अद्‌भुत साहस का काम था। साहित्य का झंडा लिए हुए प्रेमचंद ऐसे मार्ग पर चल पड़े जिसे पहले किसी ने तय न किया था। उनकी प्रतिभा का प्रमाण यह है कि उन्होंने जो साहस किया, वह कभी भी दुःसाहस साबित नहीं हुआ। प्रेमाश्रम एक अत्यंत लोकप्रिय उपन्यास के रूप में आज भी जीवंत है।"[7] "कृषक जीवन के यथार्थ को उजागर करता उपन्यास प्रेमाश्रम को भी यदि कृषक जीवन का महाकाव्य कहेंगे, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।"[8]

प्रेमचंद कृत रंगभूमि उपन्यास में सूरदास को केन्द्र में रखकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज उठाई गई है। प्रशासन सूरदास से सिगरेट की फैक्ट्री खोलने के उददेश्य से उसकी जमीन लेना चाहती थी लेकिन सूरदास अधिक कीमत पर भी जमीन देने को तैयार नहीं था, क्योंकि जमीन गाँव के पशुओं की चारागाह के लिये रखना चाहता है। जमीन की समस्या को दर्शाते हुए सूरदास कहता है कि "धरती माँ होती है और माँ बेची नहीं जाती। धर्म, प्रशासन और राज्य की सारी ताकत ज्ञान सेवक के साथ है उसकी सह पाकर पुलिस सूरदास पर मनमाना अत्याचार करती है। उसकी झोपड़ी में आग लगा दी जाती है उसके चरित्र को लांछित किया जाता है लेकिन सबकुछ सहकर भी सूरदास अपने स्वामित्व वाली भूमि छोड़ने को तैयार नहीं है।"[9] रंगभूमि में नायक सूरदास किसान नहीं है लेकिन उसके पास बंजर जमीन है। भूमि अधिग्रहण की समस्या को उपयुक्त उपन्यास में लिया गया है।

जमीदारी प्रथा को विस्तार से अंकित करता प्रेमचंद जी का उपन्यास 'कायाकल्प' कृषक शोषण को प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में विलासमय जीवन के दुष्परिणामों को उजागर करने और किसानों पर सामंती अत्याचारों को दर्शाया है। 'कायाकल्प' को संज्ञान में लेते हुए डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं– 'कायाकल्प' दो वर्गों की कहानी है– एक तरफ जागीरदार और रानियाँ है और दूसरी तरफ किसान जनता है। 'कायाकल्प' किसानों का नहीं होता बल्कि जगदीशपुर की रानी देवप्रिया का होता है। उपर्युक्त कथनों से कहा जा सकता है कि 'कायाकल्प' में आंशिक रूप से कृषक वर्ग का उल्लेख किया गया है।

प्रेमचन्द लिखित 'गोदान' उपन्यास को कृषक जीवन का महाकाव्य कहा गया है। सन 1936ई. में प्रकाशित 'गोदान' में कृषक वर्ग का जीता–जागता चित्रण किया है। गोदान का नायक होरी भारत के तात्कालीन किसानों का प्रतीक है। किसानों के गुण–अवगुण को दर्शाता होरी देश का सच्चा किसान है। गोदान प्रेमचंद जी का यथार्थवादी उपन्यास है। होरी के रूप में लेखक ने भारतीय किसानों की छोटी–छोटी अभिलाषा को व्यक्त किया है। भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति को

उजागर करते हुए होरी कहता है –"साठ तक पहुचने की नौबत न आएगी धनिया इससे पहले ही चल देगे।"[10] किसान की परिस्थितियाँ उसे समय से पूर्व ही वृद्ध बना देती है। होरी इस कटु सत्य की ओर इशारा करता है, जो कठिन परिश्रम करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा का कथन है– "प्रेमचंद ने जब गोदान लिखा था तब वह खुद भी कर्ज के बोझ से दबे हुए थे। गोदान की मूल समस्या ऋण की समस्या है। इस उपन्यास में किसानों के साथ मानो वह अपनी आप–बीती कह रहे थे।"[11] गोदान की मुख्य समस्या में आर्थिक रूप से कमजोर दीन–हीन दरिद्र शिक्षा के अभाव में शोषित होते किसान हैं। प्रेमचंद ने आरम्भ से ही किसानो के पारिवारिक, आर्थिक एवं शोषणीय स्थिति को हमारे सम्मुख रखा है।

प्रेमचंद जी ने उपन्यास के माध्यम से जीवन की समस्याओं को रेखांकित किया है। कृषि प्रधान देश होने के बाद भी भारत का किसान दो जून की रोटी को तरसता है। यह विडंबना है कि अन्न उपजाने वाला अन्नदाता ही अभावग्रस्त है।

प्रेमचंद जी के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने कृषक जीवन में जमीदारों और कारिन्दों के अत्याचारों का अंकन गहरी करूणा और संवेदना के साथ किया है। जयशंकर प्रसाद का 'तितली' सन 1934ई. में प्रकाशित कृषक परिवेश के यथार्थ को दर्शाता उपन्यास है। 'तितली' ग्राम्य जीवन से संबद्ध उपन्यास है।

ग्रामीण परिवेश का यथार्थवादी स्वरूप शिवपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती दुनिया' में मिलता है सन 1926ई. में प्रकाशित इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन का परिवेश उभर कर सामने आता है, जिसमें खेत–खलिहान, हल, बैल, गाय, भैंस, बाग–बगीचे, फसल, हाट–बाजार, तीज–त्योहार आदि दर्शाए गए हैं| जमींदार वर्ग से किसान खेतिहर मजदूर बनने जैसे दृश्यों का सजीव चित्रण 'देहाती दुनिया' में दिखाया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कृषक जीवन का मार्मिक तथा यथार्थ चित्रण प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में सर्वाधिक देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. शाही, राधेगोविन्द, किसान चेतना और प्रेमचन्द का साहित्य, लोकायतन प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण–2006, पृष्ठ–86.
2. भटनागर, महेन्द्र(डॉ.), समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद, ओमप्रकाश बेरी हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, प्रथम संस्करण–1957, पृष्ठ–126.

3. श्रीवास्तव, जितेन्द्र, भारतीय समाज की समस्याएँ और प्रेमचन्द, उमेश लेजर प्रिंट्स प्रकाशक दिल्ली–32, संस्करण–2010, पृष्ठ–75.
4. तिवारी, रामचन्द्र(डॉ.), हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी उत्तर प्रदेश, दशम संस्करण–2015, पृष्ठ–687.
5. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.)लि. नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ–8.
6. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद(उ.प्र.), षष्ठम संस्करण–2011, पृष्ठ–37.
7. शर्मा, रामविलास(डॉ.), प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–45.
8. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहबाद(उ.प्र.), षष्ठम संस्करण–2011, पृष्ठ–39.
9. शर्मा, रामविलास(डॉ.), प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ–70.
10. प्रेमचंद, गोदान, मेंपल प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण–2019, पृष्ठ–4.
11. शर्मा, रामविलास(डॉ.), प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–112.